**E-ISSN:** 2706-9117
**P-ISSN:** 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2022; 4(2): 188-190
Received: 11-07-2022
Accepted: 16-08-2022

**सीमा रानी**
(शोधार्थी), इतिहास विभाग,
श्री खुशालदास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत

**डॉ. जितेन्द्र यादव**
(सहायक आचार्य), शोध निर्देशक,
श्री खुशालदास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत

**Corresponding Author:**
**सीमा रानी**
(शोधार्थी), इतिहास विभाग,
श्री खुशालदास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत

# अलाउद्दीन खिलजीः दूरदर्शी सुल्तान के रूप में

**सीमा रानी, डॉ. जितेन्द्र यादव**

**सारांश**
अलाउद्दीन खिलजी का शासन काल बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रभावशाली था। वह एक सफल सुल्तान था चाहे उसने अपने राज्य में कुछ कठोर नियम बना रखे थे। सुल्तान अपने राज्य में पूरी सेना का सेनानायक या सेनापति आप था क्योंकि सारी सेना पर उसका पूरा नियंत्रण था। वह एक वीर योद्धा, साहसी, निडर, बुद्धिमता, साधनों से भरपूर शासक था। अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत का पहला मुसलमान सुल्तान था, जो कि एक सफल प्रशासक और राजनीतिक था। उसने अपने राज्य में धर्म और राजनीति को अलग रखा।

**कूटशब्दः** वीर, राज्य, धर्म, प्रशासक

**प्रस्तावना**
बरनी के अनुसार खिलजियों के हाथो में सत्ता आने पर साम्राज्य तुर्को के हाथ से फिसल गया एवं दिल्ली शहर के लोग, जिन पर अस्सी वर्षों तक तुर्क जाति के सुल्तानों ने शासन किया था, तुर्कों की राजगद्दी पर खिलजियों का अधिकार देखकर प्रशंसा और विस्मय से भर उठे।[1] अलाउद्दीन खिलजी केवल खिलजी वंश का ही नहीं बल्कि दिल्ली सल्तनत का सबसे महान और प्रसिद्ध सुल्तान था। वह जलालुद्दीन खिलजी का भतीजा और दामाद था। वह शुरू से ही बड़ा वीर और साहसी युवक था। इसी गुण के आधार पर वह एक महान योद्धा और प्रशासक बना। उसने दिल्ली सल्तनत में बहुत सारे सुधार करके उसको अच्छी तरह से संगठित किया। अलाउद्दीन खिलजी का नाम इन्हीं गुणों के आधार पर मध्यकालीन भारतीय इतिहास में सवौच्च स्थान पर है। अलाउद्दीन खिलजी का जन्म शहाबुद्दीन मासूद खिलजी के घर पर 1266 ई. में हुआ। अली गुरशप उसके बचपन का नाम था। चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने उसका पालन–पोषण किया क्योंकि बचपन में ही अलाउद्दीन के पिता की मृत्यु हो गई थी। उसे बचपन में ही घुड़सवार और तलवारबाजी का बड़ा शौक था। इसलिए उससे पढ़ने–लिखने पर कोई खास ध्यान नहीं दिया गया। जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने अपनी लड़की की शादी अलाउद्दीन के साथ कर दी। इसलिए अलाउद्दीन जलालुद्दीन खिलजी का भतीजा और दामाद था।

अलाउद्दीन खिलजी कड़ा का सूबेदार तब बना जब जलालुद्दीन खिलजी 1290 ई. में दिल्ली का सुल्तान बना। जल्द ही उसे 'आरिज–ए–मुमालिक' के पद पर बैठाया गया और उसे अवध की सुबेदारी सौंपी गई। देवगिरी में उसने वहाँ के राजा रामचन्द्र के संबंधियों, ब्राहामणों तथा महाजनों को बंधक बनाया। अलाउद्दीन खिलजी ने शीघ्र ही देवगिरी पर आक्रमण करके एक शानदार सफलता प्राप्त की। यह अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण भारत पर पहला तुर्की आक्रमण था। ए.एल. श्रीवास्तव के कथनानुसार, 'देवगिरि के सफल अभियान ने सिद्ध कर दिया कि अलाउद्दीन न केवल उच्चकोटि की योग्यता रखता था अपितु वह एक बडा साहसी एवं प्रभावशाली भी था, जिसमें सगंठनकर्ता की योग्यता तथा कार्यक्षमता मौजूद थी।[2] एक तरफ अलाउद्दीन खिलजी अब दिल्ली के सिंहासन पर बैठने के सपने देखने लगा तो दूसरी तरफ परिवारिक कठिनाइयाँ भी ज्यादा बढ़ने लगी। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सपने को पूरा करने के लिए जलालुद्दीन खिलजी को धोखे से कड़ा में 1296 ई. में मरवा दिया और खुद सुल्तान बन गया और चारों तरफ सुल्तान बनने की घोषणा कर दी गई। दिल्ली सल्तनत के सुल्तान में से सबसे बड़ा सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी को माना जाता है। इसने 1296 ई. से 1316 ई. तक शासन किया।

दिल्ली पर राज्य करना कोई आसान काम नहीं था इसके लिए अलाउद्दीन खिलजी ने सुदृढ़ इरादों, आत्मविश्वास के साथ उन कठिनाइयों का सामना किया और उसे अपनी बुद्धिमता से हल किया। आखिर में वह अपने कार्य में सफल हुआ। इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत का एक महान सुल्तान सिद्ध हुआ। उसके सामने शासन करने के लिए दो उद्देश्य थे। पहला उद्देश्य– वह एक नया धर्म स्थापित करना चाहता था, जैसे हजरत मुहम्मद ने इसाई धर्म किया। दूसरा उद्देश्य– वह विश्व को जीतना चाहता था, जैसे संसार में महान सुल्तान सिकंदर ने किया।

इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी अपने उद्देश्यों को पूरा करना चाहता था परंतु उसके लिए उचित साधनों की जरूरत थी जो उस समय उपलब्ध नहीं थे। अलाउद्दीन खिलजी का दूसरा उद्देश्य जो कि विश्व को जीतने का था, उसके काज़ी अला–उल–मुल्क ने उचित सलाह देकर सुल्तान को समझाया कि नया धर्म स्थापित करना कोई आसान कार्य नहीं है। दूसरा सिकंदर की भांति विश्व को जीतने से पहले भारत को जीतना चाहिए। इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी ने काज़ी की बातों को मानकर अपने विचार छोड़ दिए इस तरह अलाउद्दीन खिलजी ने भारत को जीतने में सफल रहा।

अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली के सिंहासन पर बैठने के बाद अपने राज्य को सुरक्षित करने के लिए चार सेनापति–उलुग खाँ, नुसरत खाँ, जफर खाँ, अल्प खाँ की सहायता से पूरे विश्व को जीतने की योजना बनाई। भगवान ने मुझे भी चार मित्र दिये हैं– उलुग खाँ, नसरत खाँ, जफर खाँ, अलप खाँ जिन्होने मेरे ऐश्वर्य के प्रभाव से राजाओं की शक्ति और गौरव प्राप्त किया है यदि में चाहूं तो इन चार मित्रों की सहायता से एक नये धर्म या मत की नींव डाल सकता हूं और मेरी तलवार तथा मेरे मित्रों की तलवारें सबसे यही धर्म ग्रहण करवा लेंगी। इस धर्म के साथ मेरा तथा मित्रों की तलवारें सबसे यही धर्म ग्रहण कवा लेगी। इस धर्म के साथ मेरा तथा मेरे मित्रों का नाम पैंगम्बर और उनके मित्रों के नाम की तरह, अन्तिम दिन तक बना रहेगा।[3] वह सिकंदर की भांति पूरी दुनिया को अपने अधीन करना चाहता था, परंतु अपने काज़ी की सहायता से उसने अपनी योजना बदल दी और सबसे पहले भारत को जीतने की सोची। इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी ने एक शक्तिशाली सेना की सहायता से अपने छोटे से भाग को एक बड़े साम्राज्य में बदल दिया।

अलाउद्दीन खिलजी एक वीर योद्धा, साहसी एवं निपुण सेनापति था। वह भारत में साम्राज्य स्थापित करने वाले प्रथम तुर्क था। इसके आसन के अधीन तुर्क साम्राज्यवाद अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया था।[4] इस प्रकार भारतीय इतिहास में अलाउद्दीन खिलजी को उसकी विजयों के कारण जाना जाता है। उसकी विजय को दो भागों में बाँटा जाता है। पहली उत्तरी भारत की विजय, दूसरी दक्षिण भारत की विजय। उत्तरी भारत से अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी विजयों का सिलसिला आरम्भ किया। जिसमें उसके सेनापति उलुग खाँ, नुसरत खाँ, जफर खाँ, अल्प खाँ का नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध है। उत्तर में उसे बहुत सारे राजपूत राजाओं के साथ संघर्ष करना पड़ा जैसै– गुजरात की विजय, रणथम्भौर की विजय, मेवाड़ की विजय।

सभी विजेताओं को प्रेरणा देने वाले धन के लालच और गौरव की लालसा ने उसे भी दक्षिण के सभी राज्यों पर एक के बाद एक आक्रमण करने की प्रेरणा दी।[5] दक्षिणी भारत पर विजय प्राप्त करने वाला अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था। उसके योग्य सेनापति मलिक काफूर ने दक्षिणी भारत को जीतने में खास योगदान दिया। वह उत्तरी भारत को जीत कर उस पर शासन करना चाहता था किन्तु दक्षिणी भारत को जीत कर वह उसे समुद्रगुप्त की नीति के अनुसार अपने अधीन करना चाहता था। वह चाहता था कि वह राज्य उसकी अधीनता स्वीकार करके उसे वार्षिक कर भेजा करें। उसने दक्षिण भारत के प्रदेश जैसे देवगिरी पर विजय, वारंगल पर विजय, द्वार समुंद्र की विजय, मथुरा की विजय प्राप्त की। अलाउद्दीन ने न केवल दिल्ली सल्तनत की मंगोलों के आक्रमणों से रक्षा ही की, बल्कि उत्तरी भारत तथा दक्षिणी भारत के बहुत से प्रदेशों पर विजय प्राप्त करके इस का विस्तार भी किया। उसका साम्राज्य पूर्व में ब्रह्मापुत्र नदी से लेकर पश्चिम में अरब सागर तक तथा उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक फैला हुआ था। उन राज्यों ने सुल्तान की अधीनता अवश्य स्वीकार की थी।[6]

इस प्रकार अलाउद्दीन ने दूरदर्शी और चतुर कूटनीति का सहारा लेते हुए उत्तरी भारत को जीत कर अपने साम्राज्य में मिलाया लेकिन दक्षिण भारत को जीत कर उसे अपने साम्राज्य में नहीं मिलाया क्योंकि उसने समुद्रगुप्त की नीति का अनुसरण किया। उसने दक्षिणी भारत के राज्यों को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर किया और बाद में उनको वही राज्य वापस कर दिया। वहाँ के शासक अलाउद्दीन को वार्षिक कर देते थे। अलाउद्दीन का उद्देश्य दक्षिण भारत की धन दौलत प्राप्त करना था ताकि वह एक अच्छी सेना तैयार कर सके। इस प्रकार अलाउद्दीन ने एक सफल नीति अपनाकर अच्छी बुद्धिमता का सबूत दिया।

अलाउद्दीन उत्तरी भारत और दक्षिणी भारत पर विजय प्राप्त करने वाला दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था। वह एक महान योद्धा और विजेता ही नहीं बल्कि एक कुशल शासन प्रबन्धक भी था। परंतु सुल्तान का आर्थिक सुधार कुछ खास किस्म का था। जिसमें राशन व्यवस्था, बाजार व्यवस्था, अनाज को गोदामो में इकट्ठा करना आदि जैसे काम किए। अलाउद्दीन खिलजी ने केवल हर क्षेत्र में सुधार ही नहीं किए बल्कि कई नई संस्थाओं की स्थापना भी की।

दिल्ली सल्तनत में सदा उत्तर–पश्चिमी क्षेत्रों से मंगोलों के हमलों का खतरा बना रहता था। इल्तुतमिश, रजिया बेगम, बहराम शाह कथा बलबन जैसे दिल्ली सुल्तानों ने भी मंगोलो के आक्रमणों का सामना करना पड़ा। जब अलाउद्दीन खिलजी राज–सिंहासन पर बैठा तो उसने भी मगोलों के प्रति एक कठोर नीति अपनाई। जिसके कारण मंगोलों को हार का सामना करना पड़ा। सुल्तान ने एक शक्तिशाली और मजबूत सेना तैयार की, पुराने किलों की मुरम्मत करवाई और नए किले बनवाये।

अलाउद्दीन खिलजी ने अपने राज्य में धर्म और राजनीति को अलग–अलग रखा, यही उसकी सबसे बड़ी विशेषता थी। अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था जिसने निरकुश रूप से शासन किया। उसने अपने राज्य में पुरोहित वर्ग को चुनौती दी। अमीरों और सरदारों की शक्ति को कम करने में सुल्तान ने कठोर कदम उठाए जैसे उनकी जागीरे जब्त कर ली, शराब पीने की मनाही करना, सामाजिक समारोह पर पाबंदी लगाना और वैवाहिक संबंधों पर रोक लगा दी। अलाउद्दीन खिलजी एक साम्राज्यवादी और तानाशाह सुल्तान था।

अलाउद्दीन ने अपने राज्य में कला और साहित्य को विशेष स्थान दिया। वह अनपढ़ होने के बावजूद भी कला और साहित्य से प्यार करता था। उसके दरबार में अमीर खुसरो द्वारा लिखित पुस्तकें तारीखें अलाई तथा आशिका थी। इसके इलावा दिल्ली सल्तनत में राज्य की शोभा बढ़ने वाले विद्धान अमीर हसन देहलवी, मीर अरसलन, कबीरूद्दीन, शेख निजामुद्दीन, काजी मुगीसुद्दीन, शेख रूकनुद्दीन आदि रहते थे। दिल्ली सल्तनत में बहुत सारे कारीगर और शिल्पकार काम करते थे क्योंकि अलाउद्दीन खिलजी को भवन बनाने का बड़ा शौक था। भवनों में जामा मस्जिद, अलाई–मीनार तथा अलाई दरवाजा अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में बनाए गए थे।

अलाउद्दीन खिलजी का शासन काल बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रभावशाली था। वह एक सफल सुल्तान था चाहे उसने अपने राज्य में कुछ कठोर नियम बना रखे थे। सुल्तान अपने राज्य में पूरी सेना का सेनानायक या सेनापति आप था क्योंकि सारी सेना पर उसका पूरा नियंत्रण था। वह एक वीर योद्धा, साहसी, निडर, बुद्धिमता, साधनों से भरपूर शासक था। अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत का पहला मुसलमान सुल्तान था, जो कि एक सफल प्रशासक और राजनीतिक था। उसने अपने राज्य में धर्म और राजनीति को अलग रखा। उसने अपने शासनकाल में उलेमा या सरदारों को भी ज्यादा शक्तिशाली नहीं होने दिया। उसने अपनी सुदृढ़ इरादे और बुद्धिमत्ता से दिल्ली सल्तनत को उन्नति के शिखर तक पहुंचा दिया। उसने अपने राज्य में शांति की स्थिति बनाए रखने के लिए मंगोलों का डटकर मुकाबला किया। उसने अपने राज्य में बहुत सारे आर्थिक सुधार किए। जिससे सुल्तान ने

अपने राज्य के राजकोष में वृद्धि की। सुल्तान के अंदर कुछ अवगुण भी थे। अलाउद्दीन ने एक निरंकुश शासक के रूप में कार्य किया। सुल्तान ने केवल हिंदुओं के साथ ही नहीं बल्कि मुसलमानों के साथ भी बहुत बुरा व्यवहार किया फिर भी आखिर में हम यही कह सकते हैं कि दिल्ली सल्तनत के सुल्तानो में अलाउद्दीन खिलजी को भी उत्तम स्थान प्राप्त था।

शासन काल के आखिरी दिनों में सुल्तान का समय बड़ा ही कष्टदायक गुजरा। उनकी तबीयत बहुत ही बिगड़ गई परन्तु सुल्तान की पत्नी और बच्चों ने उनकी कोई भी फिकर नही की। अब इस परिस्थिति का फायदा मलिक काफूर ने उठाया। उसने अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति अलप खाँ को मरवा दिया क्योंकि वह मलिक काफूर का विरोधी था अर्थात अल्प खाँ, मलिक काफूर को नापसंद करता था। उसके बाद मलिक काफूर ने अलाउद्दीन के दो बड़े पुत्रों खिज्र खाँ और शादी खाँ को जेल में डलवा दिया। अब मलिक काफूर के हाथों में शासन की सारी शक्तियाँ आ गई। अब मलिक काफूर एक प्रभावशाली व्यक्ति बन गया। मलिक काफूर द्वारा किए गए धोखे से अलाउद्दीन खिलजी की 6 जनवरी 1316 ई. में मृत्यु हो गई। अब मलिक काफूर ही समस्त शक्ति का स्वामी बन गया।

## संदर्भ


1. हुकम चन्द, मध्यकालीन भारत (1206 ई.–1526 ई.), नई दिल्ली, 2017, पृ. 99
2. ए.सी. अरोड़ा, मध्ययुगीन भारत का इतिहास, जालंधर, 2008, पृ. 81
3. आर. सी. अग्रवाल, प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक व राजनितिक इतिहास, नई दिल्ली, 2017, पृ. 759
4. एस.पी. सभ्रवाल, हिस्ट्री ऑफ मिडिवल इंडिया, जालंधर शहर, 2014, पृ. 70
5. वही, पृ. 72
6. अविनाश चन्द अरोड़ा, प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत का इतिहास, जालंधर शहर, 1988, पृ. 149